समतामूलक समाज की स्थापना के लिए लें प्रतिज्ञा- कुलपति राय

65वें स्वतंत्रता दिवस समारोह में हिंदी विवि के कुलपति विभूति नारायण राय ने किया ध्वजारोहण

वर्धा, 16 अगस्त, 2011: 65वें स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के प्रशासनिक भवन के सामने कुलपति विभूति नारायण राय ने ध्वजारोहण किया तथा विश्वविद्यालय परिवार को संबोधित करते हुए कहा कि समतामूलक समाज की स्थापना के लिए हम 65वें स्वतंत्रता दिवस पर प्रतिज्ञा लें।

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि हमारी आजादी के 64 वर्ष हो गए और हम 65वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। इस दौरान बहुत सारी चीजें हुई और बहुत सारी चीजें नहीं हुई, उनमें कुछ अच्छी थी कुछ बुरी। जो सबसे अच्छी थी उसको हम याद करें तो हमें एक बहुत बार-बार दोहराने वाला चर्चिल का वक्तव्य याद आता है जो उन्होंने ब्रिटिश पार्लियामेंट में कहा था कि-ठीक है ये लोग आजादी मांग रहे हैं, इनको हम आजादी दे रहे हैं लेकिन ये इसके योग्य नहीं हैं। उसने कहा था कि आसमान से खून की बारिस होगी और कहीं न कहीं उनके मन में ये आशंका थी, जिसे आप कहें कि आशंका नहीं, सदिच्छा थी कि अगर हमारा दयालु हाथ इन भारतीयों के सिर से उठ जाएगा तो ये देश टुकड़े-टुकडों में बंट जाएगा। चर्चिल की इन धारणाओं को हमने गलत साबित कर दिया और दुनिया के

समक्ष हम एकता की मिसाल कायम कर सके इसके लिए हम सभी को प्रसन्नता होनी चाहिए।

कुलपति राय ने कहा कि जब हम आजाद हुए उस दौरान जिस तरह की प्रवृतियां थी, देश सांप्रदायिक दंगों में झुलस रहा था, भाषा को लेकर जगह-जगह आंदोलन हो रहे थे, एक प्रकार से दीवारें खड़ी हो रही थीं। एक बहुत बड़ा हिस्सा जिसको हम उत्तर-पूर्व कहते हैं, वहां पर बहुत सारी शक्तियां भारत से अलग होने के लिए लड़ रही थी, इन सबको लेकर हममें से बहुत सारे लोग जिसे प्रोफिट ऑफ डूम्स कहते हैं, जिन्हें अभिशाप के प्रवक्ता कह सकते हैं, उनका मानना था कि ये देश बहुत दिनों तक एक नहीं रहेगा, उनकी भविष्यवाणी भी गलत साबित हुई। हमारे बगल में पाकिस्तान बना था। धर्म के नाम पर बंटवारा हुआ। धर्म अपने आप में एक जोड़नेवाली शक्ति है। पाकिस्तान 25 साल के बाद ही एक नहीं रह पाया, पाकिस्तान का विभाजन हो गया। कल 14 अगस्त को पाकिस्तान ने अपना स्वतंत्रता दिवस मनाया। इंटरनेट पर वहां के अखबारों में प्रधानमंत्री का भाषण पढ़ रहा था, उन सबमें एक ख़ास तरह का अवसाद दिखाई दे रहा है, कहीं न कहीं उनके मन में ये दर्द दिखाई दे रहा है कि हम धीरे-धीरे असफल राज्य के रूप में परिवर्तित होते जा रहे हैं। भारत में सारी सनकी वक्तव्यों के बावजूद इस तरह का अवसाद नहीं दिखाई दे रहा है, ये भी एक अच्छी चीज हुई। लेकिन इन 64 वर्षों में जो चीजें नहीं हुई उसके लिए हमें तकलीफ होनी चाहिए और वे चीजें हो, उनकी कोशिश करनी चाहिए। अभी भी हमारे यहां धार्मिक कट्टरता, बनी हुई है, छोटे-छोटे मसलों पर हम लड़ते रहते हैं। अभी भी जो बराबरी पर आधारित समाज बनना चाहिए था वो नहीं बना। लैंगिक असमानता, धार्मिक कट्टरता, ये सारी चीजें समाप्त हो जानी

चाहिए थी, 64 वर्ष कम नहीं होते। सिर्फ 10 सालों में लेनिन ने पूरे सोवियत रूस को साक्षर कर दिया था, बिजली के मामले में न सिर्फ आत्मनिर्भर बनाया बल्कि पड़ोसी मुल्कों को भी देने लगे थे। इन 64 वर्षों में जो चीजें नहीं हुई, ऐसे में आज हमें स्वतंत्रता की 65 वीं वर्षगांठ पर प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि एक समतामूलक, धार्मिक सहिष्णुतावाला, भाषाई स्वतंत्रता वाला राज्य बने तथा फलता-फूलता रहे और आगे बढ़ता रहे।

समारोह के दौरान विश्वविद्यालय के सुरक्षा अधिकारी राजेंद्र घोडमारे ने कुलपति राय को पारंपरिक सलामी दी। गृह रक्षक दल के बैण्ड ने जन-गण-मन...की धुन बजायी। ध्वजारोहन के पूर्व कुलपति राय ने गांधी हिल स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किया। इस अवसर पर विवि के राइटर-इन-रेजीडेंस से.रा.यात्री, कुलसचिव डॉ.के.जी.खामरे, विशेष कर्तव्याधिकारी नरेन्द्र सिंह, प्रो.मनोज कुमार, प्रो.अनिल के.राय अंकित, प्रो.के.के.सिंह, प्रो.रवि चतुर्वेदी, डॉ.नृपेन्द्र प्रसाद मोदी, डॉ.शंभू गुप्त, कादर नवाज खान, पी.सरदार सिंह सहित बड़ी संख्या में अध्यापक, कर्मी, शोधार्थी, विद्यार्थी तथा वर्धा के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

अमित कुमार विश्वास